

ختم قادریہ



بیت اللہ قادریہ
مفتی اعظم
ہندوستان

ખત્મે કાદરીયા
खतमे कादरीया



: खतम शरीफ व तरीकए :

15 वीं सदी के मुजददिद हुजूर मुफतीये आ'ज़मे हिंद
पेश कर्दा : हजरत जमाल रज़ा खान साहब
बरेली शरीफ यु.पी. इन्डिया मो. : 09412823532

More Info : WWW.MUFTIAAZAM.COM

THIS COPY IS FOR FREE DISTRIBUTION NOT FOR SALE.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

FAZAAIL KHATM-E-QADRIA

Beemariyon se shifa paane, Balaon ko door karne, Mushkilon ke aasaan hone, Qaidiyon ki rihaayi ke liye, Qarz se chhutkara paane garz ke jis deeni wa duniyaavi balaa wa aafat ke daf'iya ke liye ise padhaa jaaye. Insha Allah Ta'ala bahut jald wo aafat door ho aur jis jayaz maqsad ke liye padha jaaye zaroor kaamyabi haasil ho. Baa Wuzu mo'attar ho kar padhein. Mujarrab dar Mujarrab (Aazmaaya huwa) hai.

FAZAIL QASEEDA-E-GAUSIA

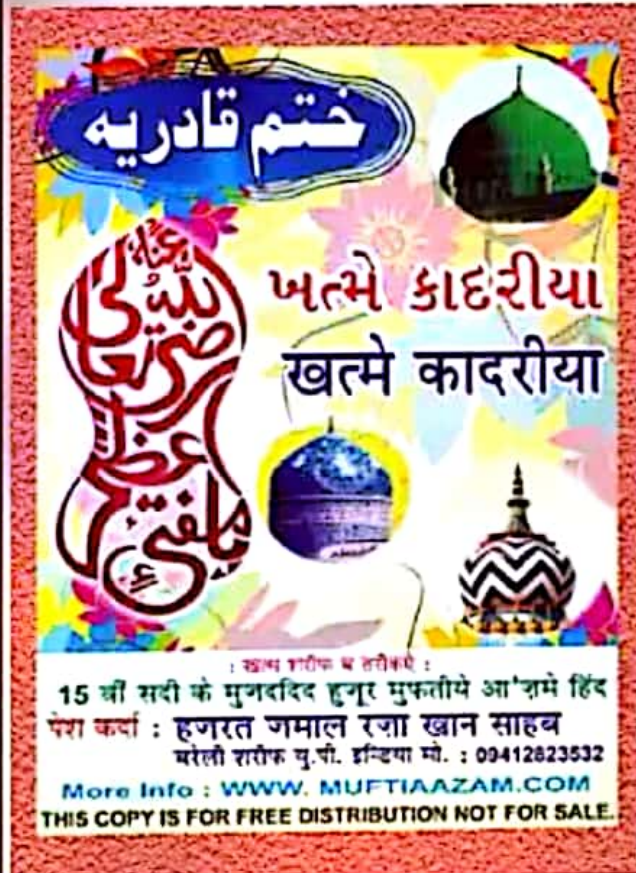
Ye Qaseeda-e-Mubaaraka Huzoor Sayyiduna Shaikh Abdul Qadir Jilani رضي الله عنه ki Zaban-e-Faiz Tarjuman se ada huwa hai. Aur hamare Silsila-e-Qadria mein is ka wird Daulat-e-Zaahiri wa Baatini ke husool ka sabab hai.

- Is Qaseeda-e-Mubaaraka ka wird Quwwat-e-Haafiza ko zyaada karta hai.
- Har mushkil o sakht kaam ke liye 40 roz padhne se wo kaam pura ho jaata hai.
- Har marz o takleef ke liye 3 baar ya 5 baar padhna mufeed hai.
- Aaseb zada (Jadu Tona ke asar wale) Aur jinn wale mareez ke liye rogan par dam karke us ke jism par malein dafa hoga.
- Baanjh Aurat is Qaseeda-e-Mubaaraka ko sahi padhne wale se 41 ya 21 baar padhwakar pani par dam karke 40 roz piye to haamila ho jaye aur Huzoor Gause Azam رضي الله عنه ki barkat se farzand naseeb hoga. (Majmoo'a-e-Aamale Raza)

طالب دعا
گلزار رضوی

Andriod Application Khatam-E-Qadria & Shajra Sharif

Faizan -E-
Huzur Jamal-E-Millat



UPDATE

AVAILABLE NOW



Join Gulzar Razvi on YouTube 9825186022

LEARN HOW TO READ

- * READ EVERY WAZIFA 111 TIMES
- * IF YOU ARE ALONE YOU CAN RECITE EVERY WAZIFAS 11 TIMES ALSO
- * AFTER RECITING ALL THE WAZIFAS
 - * RECITE SURAH - E - YASEEN SHAREEF 1 TIME
 - * RECITE QASIDAH - E - GAUSIA SHAREEF 1 TIME
 - * RECITE SHAJRA - E - QADRIA SHAREEF 1 TIME
- * AND THEN MAKE DUA FOR ALL THE UMMAH AND SPECIALLY FOR BLESSING YOU WANT TO ACQUIRED.
- * IF YOU RECITE ALL THE WAZIFAS GIVEN IN THIS BOOK YOU WILL GAIN COUNTLESS BLESSINGS IN THIS WORLD AS WELL AS IN THE HEREAFTER BY THE WASILA OF

Sārkar Gāūs~E~AAZAM

Jāzāk'Allah

Khair

A.C
Anas Creation

खतमे कादरीया शरीफ पढने का तरीका

हर वजीफा आपको १११ मरतबा पढना है
अगर आप तन्हा हौ तो ११ बार भी पढ सकते है।

सब वजीफे खतम होने के बाद

१ बार सुरए यासीन शरीफ

१ बार कसीदा ए गौसिया शरीफ

१ बार शजरा ए कादरीया, रजविया

पढ कर फिर फातेहा पढे और इसाले सवाब करे
और जो मकसद के लिए खतम पढा था उसके
लिये दुआ करे।

फकीर गुलजार रजवी को और उसके पीरो मुशीद
नवासए हुजूर मुफती आजम हुजूर जमाल रजा
साहब कादरी, रजवी, नूरी को दुआ मे याद रखें

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَعْدِنِ
الْجُودِ وَالْكَرَمِ وَاللَّيْلِ الْكِرَامِ وَأَصْحَابِهِ الْعِظَامِ
وَأَبْنِهِ الْكَرِيمِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ. ۱۱۱ بار

दुइडे गौषिया

अल्लाहुम्म सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना
मुहम्मदिम मअ-दिनिल जूदि वल-करमि
वआलिहिल-किरामि व अस्हाबिहिल इजामि वब-
निहिल करीमि व बारिक व सल्लिम. -१११ बार

दुरुदे गौषिया

अल्लाहुम्म सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना
मुहम्मदिम मअ-दिनिल जूदि वल-करमि
वआलिहिल-किरामि व अस्हाबिहिल इजामि वब-
निहिल करीमि व बारिक व सल्लिम. -१११ बार
ए अल्लाह तआला ! हमारे सरदार और मौला हजरत
मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम) जो जूदो
करम के मंबओ मरकज हैं उन पर रहमत, बरकत और
सलामती नाजिल फरमा और उनकी आले पाक और उनके
अस्हाबे इजाम और उनके वल्दे करीम(गौषेपाक)पर भी

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ
(صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) . ۱۱۱ بار

ला ईला-ह इल्लल्लाहु
मुहम्मदुर रसूलुल्लाह
(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)-१११ बार.

ला इला-ह इल्लल्लाहु
मुहम्मदुर रसूलुल्लाह
(सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)-१११ बार.

अल्लाह तआला के सिवा
कोई मअबूद नहीं.
मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)
अल्लाह के रसूल हैं.

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ
أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ
۱۱۱ بار

सुब्हानल्लाहि व बिहमिद्ही
अस्तग-फिरुल्लाह व अतूबु इलयहि.
- १११ बार.

सुब्हानल्लाहि व बिहमिद्ही
अस्तग-फिरुल्लाह व अतूबु इलयहि.
- १११ बार.

अल्लाह तआला पाक है और उसी के लिए
है तारीफ. मैं इस्तिगफार करता हूं
और उस की तरफ तौबा करता हूं.

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ
الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ. ۱۱۱ بار

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला ईला-ह
ईल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हव-ल वला
कुव्वत ईल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम. -
१११ बार.

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इला-ह
इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हव-ल वला
कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम.
- १११ बार.

अल्लाह तआला पाक है और तमाम तारीफें अल्लाह
तआला के लिये हैं. अल्लाह तआला के सिवा कोई
इबादत के लायक नहीं. और अल्लाह तआला सब
से बडा है. नेकी करने और बुराई से बचने की
कुव्वत अल्लाह तआला अता फरमाता है जो बुलंद
अज्ञमत वाला है.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○ الرَّحْمَنِ
الرَّحِيمِ ○ مَا لِكَ يَوْمَ الدِّينِ ○ إِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ○ اهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيمَ ○ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ○

॥ १ ॥

अल्लहु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन. अर रहमानिर
रहीम. मालिकि यवमिद दीन. इय्या-क नअ-बुदु व
इय्या-क नस्तइन. इहदिनस सिरातल मुस्तकीम.
सिरातल्लज़ी-न अन्अम्त अलयहिम गयरिल मग्दूबि
अलयहिम वलद दाल्लीन. - १११ बार

अल्लहु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन. अर रहमानिर
रहीम. मालिकि यवमिद दीन. इय्या-क नअ-बुदु व
इय्या-क नस्तइन. इहदिनस सिरातल मुस्तकीम.
सिरातल्लज़ी-न अन्अम्त अलयहिम गयरिल मग्दूबि
अलयहिम वलद दाल्लीन. - १११ बार

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ○ وَوَضَعْنَا عَنكَ
 وِزْرَكَ ○ أَلْدَيْتُ اِنْقِصَ ظَهْرَكَ ○ وَرَفَعْنَا لَكَ
 ذِكْرَكَ ○ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ○ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ
 يُسْرًا ○ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ○ وَإِلَىٰ رَبِّكَ
 فَارْغَبْ ○ ۝ ۱۱۱ ۝

अलम नशरह ल-क सद-र-क. व व दअना अन्क विज
 रकल्लजी अन्क-द जह-र-क. व रफअ-ना ल-क जिक-र-क.
 इन्न मअल उंस-रि युस-रन इन्न मअल उंस-रि युस-रन
 इज्ज इरगत इंसब. व इला रब्बि-क इर-गब. - १११ बार

अलम नशरह ल-क सद-र-क. व व दअना अन्क विज्ञ
 रकल्लजी अन्क-द जह-र-क. व रफअ-ना ल-क जिक-
 र-क. फइन्न मअल उंस-रि युस-रन इन्न मअल उंस-रि
 युस-रन फइज्जा फरगत फंसब. व इला रब्बि-क फर-गब.
 - १११ बार

कया हमने तुम्हारा सीना कुशादह न किया और तुम पर से तुम्हारा बोझ
 उतार लिया. जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी. और हमने तुम्हारे लिये
 तुम्हारा जिक्र बुलंद कर दिया. बेशक दुश्चारी के साथ आसानी है.
 बेशक दुश्चारी के साथ आसानी है. तो जब तुम(नमाज से) फारिग हो तो
 (दुआमें) मेहनत करो और अपने रब ही की तरफ रगबत करो.

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ
يَلِدْ ۝ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا
أَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

कुल हुवल्लाहु अहद. अल्लाहुस समद.
लम यलिद व लम यूलद. व लम यकुल्लहु
कुफुवन अहद. - १११ बार.

कुल हुवल्लाहु अहद. अल्लाहुस समद.
लम यलिद व लम यूलद. व लम
यकुल्लहु कुफुवन अहद. - १११ बार.

तुम फरमाओ वो अल्लाह एक है. अल्लाह बे
नियाझ है. न उस की कोई औलाद और न
वो किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड
का कोई.

يَا بَاقِي أَنْتَ الْبَاقِي ۥۥۥ ۥۥۥ

या बाकी अन्तल बाकी - १११ बार.

या बाकी अन्तल बाकी - १११ बार.

ए बाकी रहनेवाले तू ही बाकी रहनेवाला है.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا شَافِي أَنْتَ الشَّافِي ۥۥ३ ॥

या शाई अन्त३ शाई - १११ बार.

या शाफी अन्त३ शाफी - १११ बार.

ए शिफा देनेवाले तेरे ही कब्जे में शिफा है.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا كَافِي أَنْتَ الْكَافِي ۥۥ३ ॥

या काई अन्तल काई - १११ बार.

या काफी अन्तल काफी - १११ बार.

ए किफायत करनेवाले तू ही (हमें) काफी है.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا هَادِي أَنْتَ الْهَادِي ۥۥ३ ॥

या हादी अन्तल हादी - १११ बार.

या हादी अन्तल हादी - १११ बार.

ए हिदायत देनेवाले तू ही हमें हिदायत देनेवाला है.

يَا رَسُولَ اللَّهِ انْظُرْ حَالَنَا
يَا حَبِيبَ اللَّهِ اسْمَعْ قَالَنَا
إِنِّي فِي بَحْرِهِمْ مُغْرَقٌ
خُذِيْدِي سَهْلٌ لَنَا إِشْكَالَنَا - ۱۱۱ بار

या रसूलल्लाहि उन्जुर हा-लना
या हबीबल्लाहि इस्मअ का-लना
इन्ननी फी बहरि हम्मिम मुग्रकुन
पुज यदी सह-हिल लना इशकालना - १११ बार

या रसूलल्लाहि उन्जुर हा-लना
या हबीबल्लाहि इस्मअ का-लना
इन्ननी फी बहरि हम्मिम मुग्रकुन
खुज यदी सह-हिल लना इशकालना - १११ बार
ए अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) हमारी हालत पर
तवज्जोह फरमाइये. ए अल्लाह तआला के हबीब
(ﷺ) हमारी अर्ज समाअत फरमाइये. बेशक मैं
गमों(परेशानीयों)के समंदर में गर्क हूं. मेरा हाथ पकड़ें और
हमारी मुशिकलात को (बिइजनिल्लाह) आसान फरमादें.

يَا حَبِيبَ إِلَهِ خُذْ بِيَدِي
مَا لِعَجْزِي سِوَاكَ مُسْتَنْدِي

- १११ बार

या उबीबल ईलाही खुज़ बियदी
मा लिअज-जी सिवा-क मुस्तनदी
-१११ बार

या हबीबल इलाही खुज़ बियदी
मा लिअज-जी सिवा-क मुस्तनदी
-१११ बार

अे मअबुदे बर हक के महबूब ! मेरी
दस्तगीरी फरमाएँ. मेरी कमजोरी का
सहारा आप के सिवा कोई नहीं.

إِلَهِي أَنْتَ فِي حَالِي مُحَوَّلٌ
فَبَدِّلْ ذِلَّتِي بِالْعِزِّ بَدِّلْ
فَسَهِّلْ يَا إِلَهِي كُلَّ صَعْبٍ
بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْأَبْرَارِ سَهِّلْ - ۱۱۱ بار

ईलाही अन्त ई हावी मुहव्विल
इब्ददिल ज़िल्लती बिल इज्जि बद-दिल
इ-सह-हिल या ईलाही कुल्ल सअ-बिन
बि हुर्मति सैयिदिल अबरारि सह-हिल. -१११ बार

इलाही अन्त फी हाली मुहव्विल
फ बददिल ज़िल्लती बिल इज्जि बद-दिल
फ-सह-हिल या इलाही कुल्ल सअ-बिन
बि हुर्मति सैयिदिल अबरारि सह-हिल -१११ बार
या अल्लाह ! तू मेरे हाल को जब चाहे बदल सकता
है । तो मेरी ज़िल्लत और बदनामी को इज्जत और
खुशनामी से बदल दे । इलाही हर मुश्किल को
आसान करदे. नेक पाकबाजों के सरदार की हुर्मत
के सद्के में आसान करदे.

يَا صِدِّيقُ يَا عُمَرَ يَا عُثْمَانَ يَا حَيْدَرُ
دَفْعَ شَرِّ كُنْ خَيْرَ آوِرِ يَا شَبِيرِ يَا شَبْرِ
۱۱۱ بار

या सिद्दीक, या उमर, या उस्मान या
हैदर दफअ शर कुन खैर आवर या
शब्बीर या शब्बर. - १११ बार.

या सिद्दीक, या उमर, या उस्मान या हैदर
दफअ शर कुन खैर आवर या शब्बीर या
शब्बर. - १११ बार.

ए हजरत अबूबक्र सिद्दीक, ए हजरत उमरे
फारुक, ए हजरत उस्माने गनी, ए हजरते
हैदरे करार, ए शब्बीर (इमामे हुसैन) ए
शब्बर (इमामे हसन) रदियल्लाहु तआला
अन्हुम (आप सब) बदी दुर करें और भलाई
लाएँ. (हमारे लिये)

يَا حَضْرَتِ سُلْطَانِ شَيْخِ سَيِّدِ شَاهِ
عَبْدِ الْقَادِرِ جِيلَانِي شَيْئًا لِلَّهِ الْمَدَدُ.
۱۱۱ بار

या हजरत सुल्तान शैख सय्यिद शाह
अब्दल कादिर जिलानी शैअल लिद्दाह
अल मदद - १११ बार

या हजरत सुल्तान शैख सय्यिद शाह
अब्दल कादिर जीलानी शैअल लिद्दाह
अल मदद - १११ बार

ए हजरत बादशाह शैख सैयद अब्दुल
कादिर जीलानी अल्लाह तआला के लिये
कुछ अता किजिये और मदद फरमाइये.

ماہمہ محتاج تو حاجت روا
المدد یا غوثِ اعظم سیدنا

۔۔۔۔۔

मा उमा मोहताज तू हाजत रवा
अल मदद या गौषे आ'जम सय्यिदा
-१११ बार

मा हमा मोहताज तू हाजत रवा
अल मदद या गौषे आ'जम सय्यिदा
-१११ बार

हम सब मोहताज हैं और आप (इजने
इलाही से) हाजतों को पुरा करनेवाले हैं.
ए गौषे आ'जम ! ए सरदार ! मदद
फरमाएं.

مشکلاتِ بے عدد واریم ما

المدد یا غوثِ اعظم پیرِ ما

- ۱۱۱ بار

مشکلاتِ بے عدد داریم ما
المدد یا غوثِ اعظم پیرِ ما

- ۹۹۹ بار

مشکلاتِ بے عدد داریم ما
المدد یا غوثِ اعظم پیرِ ما -

۱۱۱ بار

ہماری مشکلات بے شمار ہیں اے غوثِ
اعظم ! (اے ہمارے پیر !) ہماری مدد
فرمائیں۔

يَا حَضْرَتَ شَيْخِ مُجَيِّدِ الدِّينِ

مُشْكِلُ كُشَا بِالْخَيْرِ - ۱۱/۱۱ بار

या हजरत शैख मुहिय्यद्दीन मुश्किल
कुशा बिल खैर

- १११ बार

या हजरत शैख मुहिय्यद्दीन
मुश्किल कुशा बिल खैर

- १११ बार

ए हजरत शैख मुहिय्यद्दीन मुश्किल
कुशा फरमाने वाले (बि इजने
इलाही) भलाई अता हो.

إِمدادُكُنْ إمدادُكُنْ از بندِ غمِ آزادُكُنْ
در دین و دنیا شادُكُنْ یا غوثِ اعظم و شکیب

۱۱۱ بار

इमदाद कुन इमदाद कुन अज बंदे गम
आजाद कुन दर दीनो दुन्या शाद कुन या
गौषे आ'उम दस्तगीर-१११ बार

इमदाद कुन इमदाद कुन अज बंदे गम
आजाद कुन दर दीनो दुन्या शाद कुन या
गौषे आ'इम दस्तगीर-१११ बार

मदद फरमाएँ मदद फरमाएँ गम की कैद
से आजाद करें दीनो दुन्या में खुशी अता
करें. ए गौषे आ'इम मदद फरमानेवाले

مُفْلِسًا نِيْمَ آمَدَه در كوئے تو

شَيْئًا لِّلَّهِ از جمالِ روئے تو

دَسْتِ بَكُشَا جانبِ زَنبِيْلِ مَا

آفریں بردست و بربازوئے تو - ۱۱۱ بار

मुफलिसा नीम आमदह दर कूओ तू

शैअल लिल्लाह अज जमाले रुओ तू

दस्त बकुशा जानिबे जंभीले मा

आफरीं बरदस्तो बर बाजूओ तू - १११ बार

मुफलिसा नीम आमदह दर कूए तू

शैअल लिल्लाह अज जमाले रुए तू

दस्त बकुशा जानिबे जंभीले मा

आफरीं बरदस्तो बर बाजूए तू - १११ बार

हम मुफलिस आप के दरे पाक पर पहुंचे भी तो आधे

अधूरे, लिल्लाह आप के चेहरे के जमाल से हमारी

मदद कीजिये । हाथ बढा दीजिये हमारी (खाली)

झोलियों की तरफ, हम कुरबान जायें आप के हाथ पर

आपके हाथ की कुव्वत पर ।

يَا سَيِّدَنَا غَوِّثِ الثَّقَلَيْنِ
أَعِثْنَا بِإِذْنِ اللَّهِ تَعَالَى
- ۱۱۱ بار

या सैयिदना गौषष्यकलैन अगिष्ना
बि ईज़निल्लाहि तआला
- १११ बार.

या सैयिदना गौषष्यकलैन अगिष्ना
बि इज़निल्लाहि तआला
- १११ बार.

ए सैयेदना गौषष्यकलैन अल्लाह
तआला के हुकम (और इजाज़त)से
हमारी मदद फरमाएँ.

خُذْ يَدِي يَا شَاهِ جِيلَانَ خُذْ يَدِي
شَيْئًا لِلَّهِ أَنْتَ نُورٌ أَحْمَدِي

॥ १११ ॥

पुज यदी या शाहे जिलां पुज यदी
शैअल लिस्लाह अन्त नूरुन अहमदी
- १११ बार

खुज यदी या शाहे जीलां खुज यदी
शैअल लिस्लाह अन्त नूरुन अहमदी -
१११ बार

ए शाहे जीलां ! मेरा हाथ पकडीये,
मेरा हाथ पकडीये, अल्लाह तआला के
लिये कुछ अता कीजीये. आप नूरे
अहमदी हैं.

طفیل حضرت دستگیر

دشمن ہوئے زیر

۱۱۱ بار

تुझेले उजरत दस्तगीर
दुश्मन होवे जेर - १११ बार

तुफैले हजरत दस्तगीर
दुश्मन होवे जेर - १११ बार

हजरत गौधे आ'झम (दस्तगीर) के
तुफैल दुश्मन मग्लूब हो जाए.

الہی خیر گردانی
بحق شاہ جیلانی

۱۱۱ بار

ईलाही खैर गरदानी
बि हकके शाहे जिलानी
- १११ बार

इलाही खैर गरदानी
बि हकके शाहे जीलानी
- १११ बार

या इलाही बहतरी फरमा दे सदके में
हुजूर शाहे जीलां के

غوثِ اعظم بمِن بے سرو ساماں مددے
قبلہ دین مددے کعبہ ایماں مددے

||| بار

गौषे आ'जम ब मने बे सरो सामां मददे
किब्ले अे ही मददे का'बअे इमां मददे
- १११ बार

गौषे आ'जम ब मने बे सरो सामां मददे
किब्ले अे ही मददे का'बअे इमां मददे
- १११ बार

या गौषे आ'जम मुज बे सरो सामां (बे
सहारा - बे वसाइल) की मदद फरमाएँ.
ए मेरे दीन के किब्ला मदद फरमाएँ. ए
मेरे इमान के का'बा मदद फरमाएँ.

یسّ شریف ایک بار

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

یَسَّ ۝ وَالْقُرْآنِ الْحَكِیْمِ ۝ اِنَّا

لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۝ عَلٰی صِرَاطٍ

مُسْتَقِیْمٍ ۝ تَنْزِیْلِ الْعَزِیْزِ الرَّحِیْمِ ۝

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا اُنذِرَ اَبَاۤئُهُمْ فَهُمْ

غَافِلُوْنَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰی

اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّا جَعَلْنَا

فِیۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلَالًا فَهٰی اِلٰی

الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا

مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ
سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ○
وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنذِرْتَهُمْ أَمْ لَمْ
تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ○ إِنَّمَا تُنذِرُ
مَنْ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ
الْغَيْبَ فَبَشِيرَةٌ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ
كَرِيمٍ ○ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَى
وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلُّ
شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ○
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ

إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ○ إِذْ
أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا
فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمُ
مُرْسَلُونَ ○ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا
بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ
شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ○ قَالُوا
رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُم لَمُرْسَلُونَ ○ وَمَا
عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ○ قَالُوا إِنَّا
تَطِيرُنَا بِكُمْ جَ لَيْسَ لَكُم تَنْتَهُوَةٌ
لَنْرْجِمَنَّكُمْ وَنَلَيَمْسَنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ

الِيمُ ۝ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ ط اِنَّ
ذِكْرْتُمْ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝
وَجَاءَ مِنْ اَقْصَى الْمَدِينَةِ رَجُلٌ
يَسْعَى زَقَالَ يَقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝
اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْئَلُكُمْ اَجْرًا وَهُمْ
مُهْتَدُونَ ۝ وَمَالِي لَا اَعْبُدُ الَّذِي
فَطَرَنِي وَاِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ ءَا تَتَّخِذُ
مِنْ دُونِهِ الْاِلَهَةَ اِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمٰنُ
بِضُرٍّ لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ
شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُون ۝ اِنِّي اِذَا لَفِي

ضَلَّلِ مُبِينٍ ۝ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ
فَأَسْمَعُونَ ۝ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ
يَلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝ بِمَا غَفَرَ لِي
رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝ وَمَا
أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ
مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ۝ إِنْ
كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ
خَامِدُونَ ۝ يَحْسُرَةٌ عَلَى الْعِبَادِ مَا
يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا

قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ
لَا يَرْجِعُونَ ○ وَإِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ
لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ○ وَآيَةٌ لَهُمْ
الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ج مَلَى أَحْيَيْنَاهَا
وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ○
وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ
وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ○
لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ ط
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ○ سُبْحَانَ الَّذِي
خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ

الْأَرْضُ وَمِنَ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا
يَعْلَمُونَ ○ وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ
النُّهَارَ فَإِذَا هُمُ مُظْلِمُونَ ○
وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ط
ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ○
وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ
كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ○ لَا الشَّمْسُ
يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ
وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ط وَكُلٌّ فِي
فَلَكَ يُسَبِّحُونَ ○ وَآيَةٌ لَهُمُ أَنَا

حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ
الْمَشْحُونِ ○ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ
مَا يَرْكَبُونَ ○ وَإِنْ نَشَاءُ نَغْرِقْهُمْ فَلَاحِ
صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ○ إِلَّا
رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ○ وَإِذَا
قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ
وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ○ وَمَا
تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ
إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ○ وَإِذَا قِيلَ
لَهُمْ انْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ لَا قَالِ

الَّذِينَ كَفَرُوا وَالَّذِينَ آمَنُوا اطَّعِمُوا مَنْ
لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ اطَّعَمَهُ ۗ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَى
هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا
يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ
وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝
وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ
الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ۝
قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَنْ مَبْعَثُنَا مِنْ مَرْقَدِنَا سَكَتَهُ

هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ
الْمُرْسَلُونَ ۝ إِنَّ كَانَتْ إِلَّا صِيْحَةً
وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا
مُحْضَرُونَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ
شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ
فِي شُغْلٍ فَائِكُهُونَ ۝ هُمْ وَ
أَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَائِكِ
مُتَكِنُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ
مَا يَدْعُونَ ۝ سَلَامٌ هُمْ قَوْلًا مِّن رَّبِّ

رَحِيمٍ ط وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا
 الْمَجْرُمُونَ ○ أَلَمْ أَعْهَدُ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيَّ
 آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ج إِنَّهُ لَكُمْ
 عَدُوٌّ مُبِينٌ ○ وَأَنْ اعْبُدُونِي ط هَذَا
 صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ○ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ
 جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ○
 هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ○
 إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ○
 الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا
 أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا

كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ
لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
الصِّرَاطَ فَأَنَّى يُصِرُّونَ ۝ وَلَوْ
نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا
اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ
نَعْمِرُهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۝ أَفَلَا
يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ
وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ
وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۝ لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا
وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ
أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ○
وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا
يَأْكُلُونَ ○ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبٌ ط أَفَلَا يَشْكُرُونَ ○
وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لَعَلَّهُمْ
يُنصَرُونَ ○ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ لَا
وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ○ فَلَا
يَحْزُنُكَ قَوْلُهُمْ ۚ إِنَّا نَعْلَمُ مَا
يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ○ أَوَلَمْ يَرِ

الْإِنْسَانَ أَنَا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ
خَصِيمٌ مُبِينٌ ○ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا
وَنَسِيَ خَلْقَهُ ط قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ
وَهِيَ رَمِيمٌ ○ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي
أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ط وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ
عَلِيمٌ ○ نِ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنْ
الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ
تُوقِدُونَ ○ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ
يُخْلِقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ ق وَهُوَ

الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ○ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا
أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ○
فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ
شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ○ (صَدَقَ اللَّهُ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ)

१ बार - कसीदअे गौषिया/ कसीदए गौषिया
१ बार - उल्कअे कादरीया/ हल्कए कादरीया
१ बार - शजरअे कादरीया/ शजरए कादरीया
दुआ व सलातो सलाम

तरीकअे फातेहा पेज नं. 77 पर हे.
तरीकए फातेहा पेज नं. 78 पर है.

More Info : www.muftiaazam.com
email : gulraza.jamali@gmail.com

फ्री कोपी हासिल करने के लिये - 098251 86022

قصيدة غوثيه- ۱ بار

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1- سَقَانِي الْحُبَّ كَأَسَاتِ الْوِصَالِ

فَقُلْتُ لِخَمْرَتِي نَحْوِي تَعَالَى

कशीदथे गौषियह-१ बार

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

सकानिल हुब्बु का'सातिल विसाली

इकुलतु लि खमरती नह-वी तआली

कसीदए गौषियह-१ बार

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

सकानिल हुब्बु का'सातिल विसाली

फकुलतु लि खमरती नह-वी तआली

(इशक ने मुझे प्याले विसाल के पिलाए. पस

में ने कहा मेरी शराब मेरे पास आ.)

2- سَعَتْ وَمَشَتْ لِنَحْوِي فِي كُنُوسِ
فَهِمَّتْ بِسُكْرَتِي بَيْنَ الْمَوَالِي

स-अत व म-शत वि नह-वी ई कुउसिन
इहिम्तु बि सुक-रती बय नल मवाली
स-अत व म-शत लि नह-वी फी कुऊसिन
फहिम्तु बि सुक-रती बय नल मवाली
(पस वो मेरी तरफ चली और कासों में आ गई पस
मैंने खुमारे मुहब्बत में समजा दोस्तो मैं हूँ.)

3- فَقُلْتُ لِسَائِرِ الْأَقْطَابِ لُمُؤَا

بِحَالِي وَأَدْخُلُوا أَيْتُمْ رِجَالِي

इकुलतु लिसाईरिल अकताबि लुम्मू
बिहाली वदखुलू अन्तुम रिजाली
फकुलतु लिसाइरिल अकताबि लुम्मू
बिहाली वदखुलू अन्तुम रिजाली
(पस मैं ने तमाम अकताब से कहा के तुम भी मेरे ही रंग
में आओ और मेरे साथीओ में शामिल हो जाओ.)

4- وَهَمُّوْا وَاشْرَبُوْا اَنْتُمْ جُنُوْدِيْ

فَسَاقِي الْقَوْمِ بِالْوَافِي مَلَالِي

वहम्मू वशरबू अन्तुम जुनूदी

इसाकिल कौमि बिल-वाफी मलाली

वहम्मू वशरबू अन्तुम जुनूदी

फसाकिल कौमि बिल-वाफी मलाली

(हिम्मत करो और पी लो के तुम मेरे लश्कर

हो कौम का साकी मुजे बहुत दे रहा है.)

5- شَرِبْتُمْ فُضْلَتِي مِنْ بَعْدِ سُكْرِيْ

وَلَا نِلْتُمْ عَلَوِيْ وَاتِّصَالِيْ

शरिबतुम फुजलती मिम बअदि सुकरी

वला निलतुम उलुव्वी वत्तिसाली

शरिबतुम फुजलती मिम बअदि सुकरी

वला निलतुम उलुव्वी वत्तिसाली

(तुम ने मेरी बची शराब पी ली मुजे खुमार होने के बाद
और न पहुंचें तुम मेरी बुलंदीए मरतबा और इत्तेसाल को.)

-6 مَقَامُكُمْ الْعُلَىٰ جَمْعًا وَلَكِنْ

مَقَامِي فَوْقَكُمْ مَا زَالَ عَالٍ

मकामुकुमुल उला जम्अंव वलाकिन

मकामी इव कुम माजा-ल आली

मकामुकुमुल उला जम्अंव वलाकिन

मकामी फव ककुम माजा-ल आली

(गो तुम सब लोगों का मकाम बलंद है लेकिन मेरा मकाम तुम सब से बलंद है और ये बलंदी जा नहीं सकती.)

-7 أَنَا فِي حَضْرَةِ الْقَرِيبِ وَحَدِي

بُصْرَفِي وَحَسْبِي ذُو الْجَلَالِ

अ-न ई उजरतित्तकरीबि वउ-दी

युसरिफुनी व उस्बी जुल जलाली

अ-न फी हजरतित्तकरीबि वह-दी

युसरिफुनी व हस्बी जुल जलाली

(मैं दरगाहे खुदावंदी में तकरुब और नजदीकी में अकेला हूँ तसरुफ वाला हूँ और मेरे लिये जुल जलाल काफी है.)

8- اَنَا الْبَازِيُّ أَشْهَبُ كُلِّ شَيْخٍ
وَمَنْ ذَا فِي الرَّجَالِ أُعْطِيَ مِثَالِي

अ-नल बाज़ियु अशहबु कुल्लि शयखिन
वमन ज़ाफिरिजलि उअ-ति मिषाली
अ-नल बाज़ियु अशहबु कुल्लि शयखिन
वमन ज़ाफिरिजलि उअ-ति मिषाली
(मैं तमाम मशाइख में सफेद बाज हूँ और कौन है
मेरे मानिन्द मरदों में जिस का मरतबा मुज जैसा हो.)

9- كَسَانِي خِلْعَةً بِطِرَازِ عَزْمٍ
وَتَوَجَّهَنِي بِتِيْجَانِ الْكَمَالِ

कसानी खिल-अतम बितिराज़ि अज़-मिन
व तव्वजनी बितीजानिल कमाली
कसानी खिल-अतम बितिराज़ि अज़-मिन
व तव्वजनी बितीजानिल कमाली
(अल्लाह पाक ने मुजे पकके इरादा की खिलअत
पहनाइ और मेरे सर पर ताज रखा है कमाल का.)

10- وَأَطَّلَعَنِي عَلَى سِرِّ قَدِيمٍ

وَقَلَّدَنِي وَأَعْطَانِي سُؤَالِي

व अत-लअनी अला सिरिन कदीमिन

व कल्लदनी व अअ-तानी सुआली

व अत-लअनी अला सिरिन कदीमिन

व कल्लदनी व अअ-तानी सुआली

(अल्लाह पाक ने वाकिफ किया मुज को कदीम राज पर और गरदन बंद डाला कद्र का मेरी गरदन में और जो मांगा अता कर दिया.)

11- وَوَلَّانِي عَلَى الْأَقْطَابِ جَمْعًا

فَحُكْمِي نَافِذٌ فِي كُلِّ حَالٍ

व वल्लानी अलल-अकताबि जम्अन

इहुक-मी नाफिजुन ई कुल्लि हाली

व वल्लानी अलल-अकताबि जम्अन

फहुक-मी नाफिजुन फी कुल्लि हाली

(मुजे बाला कर दिया तमाम अकताब (यानी जुम्ला अवलिया)पर पस मेरा हुकम जारी है हर हाल में.)

12- فَلَوْ الْقَيْتُ سِرِّي فِي بَحَارِ

لَصَارَ الْكُلُّ غَوْرًا فِي الزَّوَالِي

इलव अल-कैतु सिरी ई बिहारिन

लसारल कुल्लु गव-रन डिअ-अवाली

फलव अल-कैतु सिरी फी बिहारिन

लसारल कुल्लु गव-रन फिज-जवाली

(और अगर डाल दुं में अपना राज दरियाओं में तो वोह सब खुशक हो जाए और अपना वजूद खो बेठे.)

13- وَلَوْ الْقَيْتُ سِرِّي فِي جَبَالِ

لَذُكَّتْ وَاخْتَفَّتْ بَيْنَ الرِّمَالِ

व लव अलकैतु सिरी ई जिबालिन

लदुककत वख्तफत बयनर रिमाली

व लव अलकैतु सिरी फी जिबालिन

लदुककत वख्तफत बयनर रिमाली

(और अगर डाल दुं में अपना राज पहाड़ोंमें तो वोह

टुकटे टुकडे होकर जरे जरे हो जाए.)

14- وَلَوْ أَلْقَيْتُ سِرِّي فَوْقَ نَارٍ
لَخَمِدَتْ وَأَنْطَفَتْ مِنْ سِرِّ حَالِي

व लव अलकैतु सिरी इव-क नारिन
ल खमिदत वन्तइत मिन सिरी हाली
व लव अलकैतु सिरी फव-क नारिन
ल खमिदत वन्तफत मिन सिरी हाली
(और अगर डाल दुं में अपना राज आग पर तो वोह
मेरे राजे हाल से बुज कर खाक हो जाए.)

15- وَلَوْ أَلْقَيْتُ سِرِّي فَوْقَ مَيْتٍ
لَقَامَ بِقُدْرَةِ الْمَوْلَى تَعَالَى

व लव अलकैतु सिरी इव-क मयतिन
ल काम बिकुद-रतिल भवला तआली
व लव अलकैतु सिरी फव-क मयतिन
ल काम बिकुद-रतिल भवला तआली
(और अगर डाल दुं में अपना राज मुरदे पर तो वोह
खडा हो जाए अल्लाह तआला की कुदरत से)

16- وَمَا مِنْهَا شُهْرٌ أَوْ دُهُورٌ

تَمُرٌ وَتَنْقِضِي إِلَّا آتَالِي

व मा मिन्हा शुहूरुन अव दुहूरुन

तमुरु व तन्कजी इल्ला अताली

व मा मिन्हा शुहूरुन अव दुहूरुन

तमुरु व तन्कजी इल्ला अताली

(हर महीना और जमाना जो गुजरता है और गुजरा वो पहले मेरे पास आता है इजाजत लेने के लिये)

17- وَتُخَبِّرُنِي بِمَا يَأْتِي وَيَجْرِي

وَتُعَلِّمُنِي فَأَقْصِرُ عَنْ جِدَالِي

व तुख्बिरुनी बिमा यअति व यजरी

व तुअ-लिमुनी इअक-सिर अन जिदाली

व तुख्बिरुनी बिमा यअति व यजरी

व तुअ-लिमुनी फअक-सिर अन जिदाली

(और खबर दी जाती है मुज को हर उस चीज की जो आनेवाली है और जारी होनेवाली है और आग्रह किया मुज को कम कर जलाल याअनी सखती.)

18- مُرِيدِيهِمْ وَطِبُّ وَاشْطَحُ وَغَنِي

وَأَفْعَلُ مَا تَشَاءُ فَالِاسْمُ عَال

मुरीदी हिम व तिब वश-तह व गन्नी
वअफ-अल मा तशाउ इल धिस्मु आली

मुरीदी हिम व तिब वश-तह व गन्नी
वअफ-अल मा तशाउ फल इस्मु आली

(ए मेरे मुरीद ! हिम्मत बुलंद कर और खुश हो और
परवाह न कर और जो चाहे कर मेरा नाम बुजुर्ग है.)

19- مُرِيدِي لَا تَخَفُ اللَّهُ رَبِّي

عَطَانِي رِفْعَةَ تِلْكَ الْمَنَالِي

मुरीदी ला तखफ अल्लाहु रब्बी

अतानी रिफअतन निल्तुल मनाली

मुरीदी ला तखफ अल्लाहु रब्बी

अतानी रिफअतन निल्तुल मनाली

(ए मेरे मुरीद ! न डर, अल्लाह मेरा मालिक है. मुझे खुदा
ने रिफअत दी है मैं मरातिबे आलिया पर फाइज हूं.)

20- طُبُولِي فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ دُقْتُ

وَشَاءُ وَسُ السَّعَادَةِ قَدْ بَدَّلِي

तुबूली फ़िस्समा' वल अर्दि दुककत

व शा'िसुस्सआदति कद बदाली

तुबूली फ़िस्समाइ वल अर्दि दुककत

व शा'िसुस्सआदति कद बदाली

(मेरे नाम के आसमानों और जमीनों में डंके बज रहे हैं और सआदत के नकीब मुज पर जाहिर हो रहे हैं.)

21- بِلَادِ اللَّهِ مُلْكِي تَحْتَ حُكْمِي

وَوَقْتِي قَبْلَ قَلْبِي قَدْ صَفَالِي

बिलादुल्लाहि मुल्की तह-त हुकमी

व वकती कब्ल कल्बी कद सफाली

बिलादुल्लाहि मुल्की तह-त हुकमी

व वकती कब्ल कल्बी कद सफाली

(शहरहाए खुदा मेरा मुल्क है और मेरे जेरे हुकम हैं और मेरा वकत मेरे दिल से पहले मेरे लिये साफ हो गया.)

22- نَظَرْتُ إِلَىٰ بِلَادِ اللَّهِ جَمْعًا

كَخَرْدَلَةٍ عَلَىٰ حُكْمِ اتِّصَالِ

नजरतु ईला बिलादिल्लाहि जम्हन

कखर-दलतिन अला हुक-मित तिसावी

नजरतु इला बिलादिल्लाहि जम्हन

कखर-दलतिन अला हुक-मित तिसाली

(मैं ने देखा तमाम शहरहाअे खुदा को मिस्ले राई के दाने के वोह जो हुकमे इत्तेसाल से नजर आए.)

23- وَكُلُّ وِلْيٍ لِّهٖ قَدَمٌ وَّإِنِّي

عَلَىٰ قَدَمِ النَّبِيِّ بَدْرِ الْكَمَالِ

व कुल्लु वलिथियल लहु कदमुन व ईन्नी

अला कदमिन्नबी बदरिल कमावी

व कुल्लु वलिथियल लहु कदमुन व इन्नी

अला कदमिन्नबी बदरिल कमाली

(और हर वली का एक मकाम है मेरा मकाम पयगम्बरे खुदा के नकशे कदम पर है वो पयगम्बर जो बदरे कामिल है.)

24- مُرِيدِي لَا تَخَفْ وَاشْفَائِي

عَزُومٌ قَاتِلٌ عِنْدَ الْقِتَالِ

मुरीदी ला तखफ वाशिन इधन्नी
अजूमुन कातिलुन इन्दल किताली
मुरीदी ला तखफ वाशिन फइन्नी
अजूमुन कातिलुन इन्दल किताली

(ए मेरे मुरीद ! न डर दुश्मन से के सख्त इरादा किये
हुए हूँ कल्ल का इरादा)

25- دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتَّى صِرْتُ قُطْبًا

وَوَيْلْتُ السُّعْدَ مِنْ مَوْلَى الْمَوَالِي

दरस्तुल इल्मि हत्ता सिरतु कुत्बन
व निलतुस सअ-द मिम मवलल मवाली
दरस्तुल इल्मि हत्ता सिरतु कुत्बन
व निलतुस सअ-द मिम मवलल मवाली

(पढा मैंने इल्म यहां तकके हुवा मैं कुत्ब और पहुंचा
में बेहतरी को परवरदिगारे आलम की महेरबानी से)

26- فَمَنْ فِي أَوْلِيَاءِ اللَّهِ مِثْلِي

وَمَنْ فِي الْعِلْمِ وَالتَّصْرِيفِ حَالٍ

इमन ई अवलियाईल्लाहि मिस्वी

वमन इल इल्मि वत्तस्रीफि हाली

फमन फी अवलियाइल्लाहि मिस्वी

वमन फिल इल्मि वत्तस्रीफि हाली

(पस कौन है अवलियाअे खुदा में मिस्ल मेरे और कौन है इल्म में और हालात को जैरो जबर करने में मेरे मिस्ल.)

27- رَجَالِي فِي هَوَاجِرِهِمْ صِيَامٌ

وَفِي ظُلْمِ اللَّيْلِ كَاللَّالِي

रिजाली ई हवाजिरिहिम सियामुन

व ई झुलमिल लयाली कल्लआली

रिजाली फी हवाजिरिहिम सियामुन

व फी झुलमिल लयाली कल्लआली

(मेरा गुलाम हवाजिरात में रोजे से हैं और रात की अंधेरी में मोती है चमकनेवाला.)

28- نَبِيٌّ هَاشِمِيٌّ مَكِّيٌّ حِجَازِيٌّ

هُوَ جَدِّي بِهِ نِلْتُ الْمَوَالِي

नबीय्युन हाशिमी मक्की हिजाज़ी

हुव जदी बिही निल्तुल मवाली

नबीय्युन हाशिमी मक्की हिजाज़ी

हुव जदी बिही निल्तुल मवाली

(वो नबी हाशमी मक्की हिजाज़ी मेरे जद्दे अमजद हैं जिस से दोजहां की दौलतें मने हासिल कीं.)

29- أَنَا الْجَبَلِيُّ مُحَمَّدِيُّ الدِّينِ إِسْمِي

وَأَعْلَامِي عَلَى رَأْسِ الْجِبَالِ

अनल ज़िलिय्यु मुहिय्युदीन इस्मी

व अअ-लामी अला रअ-सिल जिबाली

अनल जीलिय्यु मुहिय्युदीन इस्मी

व अअ-लामी अला रअ-सिल जिबाली

(मैं गीलान का रहनेवाला हूं. मुहिय्युदीन मेरा नाम है

और मेरे झंडे पहाड़ों की चोटीयों पर हैं.)

30- أَنَا الْحَسَنِيُّ وَالْمَخْدَعُ مَقَامِي

وَأَقْدَامِي عَلَى عُنُقِ الرَّجَالِ

अनल हसनिय्यु वल मख्दअ मकामी

व अक़दामी अला उनुकिर-रिजाली

अनल हसनिय्यु वल मख्दअ मकामी

व अक़दामी अला उनुकिर-रिजाली

(मैं हसनी हूँ और मेरा मकाम मख्दअ (विलायत का उंचा कमरा) है और कदम मेरा हर मर्द खुदा की गरदन पर है.)

31- وَعَبْدُ الْقَادِرِ الْمَشْهُورِ إِسْمِي

وَجَدِّي صَاحِبُ الْعَيْنِ الْكَمَالِ

व अब्दुल कादिरिल मशहूरु इस्मी

व जदी साहिबुल ऐनिल कमाली

व अब्दुल कादिरिल मशहूरु इस्मी

व जदी साहिबुल ऐनिल कमाली

(और अब्दुल कादिर मेरा मशहूर नाम है

और दादा मेरे ऐनुल कमाल हैं.)

32- تَقْبَلْنِي وَلَا تَرُدُّ سُؤَالِي

اَغْنِنِي سَيِّدِي اَنْظُرْ بِحَالِي

तकब-बल-नी वला तर्दुद सुवाली

अगिष्नी सय्यिदी उन्जुर बिहाली

तकब-बल-नी वला तर्दुद सुवाली

अगिष्नी सय्यिदी उन्जुर बिहाली

(मेरा सवाल कबूल फरमा ले, रद्द न करे और मेरी मदद फरमाये या मेरे सैयद ! मेरे हाल पर नजरे करम फरमाये.)

درود غوثیہ - ۱۱۱ بار

दुरुदे गौषीयउ - १११ बार

दुरुदे गौषीयह - १११ बार

१ बार - उल्कअे कादरीया/हल्कए कादरीया(बेहतर)

१ बार - शजरअे कादरीया /शजरए कादरीया (जरूरी)

फ्री कोपी हासिल करने के लिये - 098251 86022

ٹھوڑا اندھیرا کر کے پڑھیں درود شریف ۱۰ بار

(1) أَنْتَ الْهَادِي أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْهَادِي إِلَّا هُوَ

تو ہی ہدایت دینے والا ، تو ہی حق ہے۔

وہ تو ہے جس کے سوا کوئی ہدایت دینے والا نہیں۔

(2) أَنْتَ الشَّافِي أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الشَّافِي إِلَّا هُوَ

تو ہی شفا دینے والا ، تو ہی حق ہے۔

وہ تو ہے جس کے سوا کوئی شفا دینے والا نہیں۔

(3) أَنْتَ الْكَافِي أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْكَافِي إِلَّا هُوَ

تو ہی کفایت کرنے والا ، تو ہی حق ہے۔

وہ تو ہے جس کے سوا کوئی کفایت کرنے والا نہیں۔

(4) أَنْتَ الْخَالِقُ أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْخَالِقُ إِلَّا هُوَ

تو ہی خالق ، تو ہی حق ہے۔

وہ تو ہے جس کے سوا کوئی خالق نہیں۔

(5) أَنْتَ الْمَالِكُ أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْمَالِكُ إِلَّا هُوَ

تو ہی مالک ، تو ہی حق ہے۔

وہ تو ہے جس کے سوا کوئی مالک نہیں۔

(6) أَنْتَ الرَّازِقُ أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الرَّازِقُ إِلَّا هُوَ

तु ही रोज़ी देने वाला , तु ही हक़ है ।

वो तु है जिस के सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं ।

(7) أَنْتَ الْوَاسِعُ أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْوَاسِعُ إِلَّا هُوَ

तु ही वुस्त देने वाला , तु ही हक़ है ।

वो तु है जिस के सिवा कोई वुस्त देने वाला नहीं ।

(8) أَنْتَ الْبَاسِطُ أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْبَاسِطُ إِلَّا هُوَ

तु ही खुशियों के खज़ाने खोल देने वाला , तु ही हक़ है ।

वो तु है जिस के सिवा कोई खुशिया देने वाला नहीं ।

(9) أَنْتَ الْمَوْلَى أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْمَوْلَى إِلَّا هُوَ

तु ही मौला , तु ही हक़ है ।

वो तु है जिस के सिवा कोई मौला नहीं ।

(10) أَنْتَ الْمُعْطِي أَنْتَ الْحَقُّ لَيْسَ الْمُعْطِي إِلَّا هُوَ

तु ही सबकुछ देने वाला , तु ही हक़ है ।

वो तु है जिस के सिवा कोई कुछ देने वाला नहीं ।

श॥जरए कादरीया

– एक बार

या इलाही रहम फरमा मुस्तफा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजिये खुदा के वास्ते
मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलाएँ रह शहीदे करबला के वास्ते
सैयदे सज्जाद के सद्के में साज्द रख मुझे
इल्मे हक दे बाकिरे इल्मे हुदा के वास्ते
सिदके सादिक का तसदहुक सादिकुल इस्लाम कर
बे गजब राजी हो काजिम और रजा के वास्ते
बेहरे मअ-रुफो सरी मअ-रुफ दे बेखुद सरी
जुन्दे हक में गिन जुनैदे बा सफा के वास्ते
बेहरे शिब्ली शरे हक दुन्या के कुत्तों से बचा
एक का रख अब्दे वाहिद बे रिया के वास्ते

बुल फरह का सदका कर गम को फरह दे हुस्नो सअद
बुल हसन और बू सईद सअ-द झा के वास्ते
कादरी कर कादरी रख कादरीयों में उठा
कद-रे अब्दुल कादरे कुदरत नुमा के वास्ते
अहसनल्लाहु लहू रिज-कन से दे रिजके हसन
बंदए रज़्ज़ाक ताजुल असफिया के वास्ते
नसर अबी सालेह का सदका सालेहो मन्सूर रख
दे हयाते दीं मुहिय्ये जां फिज़ा के वास्ते
तुरे इरफानो उलू व हम्दो हुस्ना व बहा
दे अली मूसा हसन अहमद बहा के वास्ते
बेहरे इब्राहीम मुज पर नारे गम गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते
खानए दिल को जिया दे रुअे ईमां को जमाल
शह जिया मौला जमालुल अवलिया के वास्ते

दे मुहम्मद के लिये रोजी कर अहमद के लिये
ख्वाने फजलुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते
दीनो दुन्या के मुजे बरकात दे बरकात से
इश्के हक दे इश्कीये इश्क इन्तमा के वास्ते
हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिये
कर शहीदे इश्के हम्जह पेशवा के वास्ते
दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुरनूर कर
अच्छे प्यारे शम्सेदी बदरुल उला के वास्ते
दोजहां में खादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हजरते आले रसूले मुकतदा के वास्ते
नूरे जाँ व नूरे इमाँ नूरे कब्रो हश्र दे
बुलहुसैने अहमदे नूरी लका के वास्ते
कर अता अहमद रजाए अहमदे मुर-सल मुझे
मेरे मौला हजरते अहमद रजा के वास्ते

सायए जुम्ला मशाइख या खुदा हम पर रहे
रहम फरमां आले रहमां मुस्तफा के वास्ते
हमको अब्दे मुस्तफा कर बेहरे शैखे मुस्तफा
मुफतीये आ'जम जनाबे बेरिया के वास्ते
या खुदा कर गौषे आ'जम के गुलामों में कबूल
हम शबीहे गौषे आ'जम मुस्तफा के वास्ते
दोनों आलम में जमाले कादरी को शाद रख
या ईलाही मुस्तफा इब्ने रजा के वास्ते
सदका इन अअ-यां के दे छे औन इज्ज इल्मो अमल
अफवो इरफां आफियत इस बेनवा के वास्ते

दुरुदे मुफतीये आ'जम ११ मरतबा पढे.
(पीछे पेज - ७४ पर लिखा है)

तरीकए फातेहा पेज ७७ पर है

غوث اعظم کے معمولات میں رہنے والی دعا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اللّٰهُ الْكَافِي قَصْدْتُ الْكَافِي وَجَدْتُ الْكَافِي
لِكُلِّ الْكَافِي كَفَانِي الْكَافِي نَعَمَ الْكَافِي وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

गौषे आ'जम के मअ-मूलात में रेहनेवाली दूआ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल्लाहुल्काफी कसत्तुल्काफी वजत्तुल्काफी

लिकुल्लिल काफी कफानिल्काफी निअ-मल काफी वलिल्लाहिल्हम्द

गौषे आ'जम के मअ-मूलात में

रेहनेवाली दूआ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल्लाहुल्काफी कसत्तुल्काफी वजत्तुल्काफी

लिकुल्लिल काफी कफानिल्काफी निअ-मल काफी

वलिल्लाहिल्हम्द

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

درودِ حضورِ مفتیِ اعظم

اللَّهُ رَبُّ مُحَمَّدٍ صَلَّى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَعَلَى ذَوِيهِ وَإِلَيْهِ أَيْدُ الدُّهُورِ وَكَرَّمَا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

دُرُودِ هُجُورِ مُفْتِیِّیْهِ آ'اُم

अल्लाहु रब्बु मुहम्मदिन सल्ला अलैहि व सल्लमा
व अला ज़वीहि व आलिही अबदद-दुहूरि व कर्रमा.

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

दुरुदे हुजूर मुफतीये आ'जम

अल्लाहु रब्बु मुहम्मदिन सल्ला अलैहि व सल्लमा
व अला ज़वीहि व आलिही अबदद-दुहूरि व कर्रमा.

درد مفتی اعظم کے فوائد

نوکری حاصل کرنے، روزگار حاصل کرنے، مقدمے میں کامیابی، کاروبار میں برکت، دشمنوں کو زیر کرنے، محبت، بیماریوں سے بچنے اور شفا کے لئے یہ درد ضرور پڑھے۔ اس درد میں اسم اعظم ہے۔ مفتی اعظم نے اس درد کو لکھا اور اس کے ۱۰۰۰ فوائدے بیان فرمائے۔

درد مفتی اعظم کے فوائد

نوکری حاصل کرنے، روزگار حاصل کرنے، مقدمے میں کامیابی، کاروبار میں برکت، دشمنوں کو زیر کرنے، محبت، بیماریوں سے بچنے اور شفا کے لئے یہ درد ضرور پڑھے۔ اس درد میں اسم اعظم ہے۔ مفتی اعظم نے اس درد کو لکھا اور اس کے ۱۰۰۰ فوائدے بیان فرمائے۔

तरीकए फातेहा

- ४ बार सुरए काफेरुन
- ३ बार सुरए इख्लास (कुल हुवल्लाह)
- १ बार सुरए फलक
- १ बार सुरए नास
- १ बार सुरए फातेहा
- सुरए बकरह(अलिफ लाम मीम)का पेहला रुकू
- १ बार दुरुद शरीफ
- फिर अल्लाहﷻसे कबुलियत की दुआ करे.
- फिर ईसाले सवाब करे.
- सब से पेहले सरकारﷻ को नजर करें.
- फिर उन के वसीले से तमाम अंबिया, अवलिया, गौष, कुतुब, कुल मोमिन मुसलमान को करे.
- बिल खुसूस हुजूर गौषे आ'जम को करें और इन सब के सदकेमें दुआ मांगे.
- सलातो सलाम जरुर पढ़ें.

ये अमल हर नेक काम के बाद करें.

विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मनकबत दर शाने हुजूर गौषे आजम رضی اللہ عنہ

अज़ : पीरे तरीक़त नवास-ए-हुज़ूर मुफ़ती-ए-आज़म
हुज़ूर जमाले मिल्लत हज़रत मौलाना जमाल रज़ा ख़ान साहब
कादरी बरकाती, रज़वी, नूरी, बैरली शरीफ़

यह दुनिया बाँदी है तेरी, तेरी मरज़ी से चलती है
ज़माना तेरा है आका तेरी बस तेरी चलती है

जमालो नूर की बारिश तेरे तलवों से होती है
वेलायत जिसको कहते हैं तेरे कदमों में मिलती है

तु ज़िन्दा है तु ज़िन्दा है तु ज़िन्दा है तु ज़िन्दा है
हयाते जावेदानी तेरे ही दर से तो मिलती है

तु कादिर है तु कादिर है यहाँ भी है वहाँ भी है
फलक पर तेरी चलती है ज़मीं पर तेरी चलती है

सभी का तू ही दाता है सभी का तू ही मौला है
जो नेअमत है जो बरकत है वह तेरे दर से मिलती है

नबी मालिक है दुनिया का नबी मालिक है जन्नत का
तु कासिम है तेरे देने से किस्मत भी बदलती है

तेरे दामन में आकर तेरा बन्दा बस यह कहता है
ख़ुदा की बन्दगी बस तेरे ही बन्दे को मिलती है

तेरी नज़रे विलायत है टिकी लौहे मुनव्वर पर
कलम की नोक तेरे ही इशारे से तो चलती है

मैं नूरी हूँ मैं रज़वी हूँ गुलामे मुफती-ए-आज़म
तेरे दरबार में आका मेरे मुर्शिद की चलती है

नहीं है ग़म मैं जन्नत में या दोज़ख़ में चला जाऊँ
तेरी जन्नत में चलती है तेरी दोज़ख़ **चलती** है

जमाले ख़स्ता को कोई भी ज़ालिम ख़स्ता न समझे
वह बन्दा है तेरा आका, तेरे बन्दे की चलती है

MASLAK-E-AALA HAZRAT ZINDABAD

مسلكِ اعلیٰ حضرت زندہ آباد

Stay with us at 📞 098251 86022, More Info : gulraza.jamali@gmail.com

JOIN ON
facebook.

GULZAR RAZVI

You
Tube

GULZAR RAZVI



WhatsApp
98251 86022

LIVE AUDIO

 **Mixlr**

GULZAR RAZVI